Subject :- Sociology Date :- 21/05/2020
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd
Topic :- कॉम्टे के सामाजिक स्थितिशास्त्र एवं सामाजिक गतिविज्ञान सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga

सामाजिक स्थितिशास्त्र एवं सामाजिक गतिविज्ञान का सिद्धान्त

Online Study Material No :- (84)

समाज को एक सुव्यवस्थित मानते हुये कॉम्टे ने समाजशास्त्र को इस प्रकार परिभाषित किया है, "समाजशास्त्र मुख्यतः सामाजिक व्यवस्था एवं प्रगति का विज्ञान है।" इस परिभाषा के दो मुख्य अंग है सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक प्रगति। जिस प्रकार मानव शरीर के भिन्न-भिन्न अंगो में एक व्यवस्था है उसी प्रकार समाज भी एक शरीर है जिसके विभिन्न अंगों एवं इकाईयों में एक व्यवस्था पायी जाती है। समाजशास्त्र प्रगति का विज्ञान है। यह इसकी गतिशील व्यवस्था का प्रतीक है। समाज में परिवर्तन का चक्र निरंतर चलते रहता है। कॉम्टे सामाजिक प्रगति को विज्ञान का लक्ष्य मानता है। Comte के अनुसार समाजशास्त्र उन भौतिक, बौद्धिक तथा नैतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन एवं विश्लेषण करता है जिनके माध्यम से सामाजिक प्रगति को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का विज्ञान है।

कॉम्टे समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक स्तर प्रदान करता है। इनके अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति का विज्ञान है। इसी आधार पर उन्होंने समाजशास्त्र की निम्न शाखाओं पर प्रकाश डाला है :-

1. सामाजिक स्थितिशास्त्र (Social statics) → यह समाजशास्त्र का यह अंग है जिसके अन्तर्गत समाजशास्त्र की रचना का अध्ययन किया जाता है। समाज में व्यक्ति की क्या स्थिति है, परिवार, राज्य आदि की क्या स्थिति है, समाज की वर्तमान स्थिति का किस प्रकार विकास हुआ है - इन सबका अध्ययन सामाजिक स्थितिशास्त्र की विषय-वस्तु है। इस सम्बन्ध में Bogardus ने कहा है कि "सामाजिक स्थितिशास्त्र समाजशास्त्र की वह शाखा है जो सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न अवयवों के बीच क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं के नियम की खोज करता है किन्तु यह उनके मौलिक आन्दोलन में कोई अभिरुचि नहीं लेता है जो सदैव शनैः-शनैः उन्हें संशोधित करता है।"
2. सामाजिक गतिविज्ञान (Social Dynamics) → इसका सम्बन्ध उन क्रमिक अवस्थाओं से है जिससे मानवीय समाज को गुजरना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

Auguste Comte के अनुसार सामाजिक गतिविज्ञान को अधिक महत्वपूर्ण मानना चाहिए अपेक्षाकृत सामाजिक स्थितिविज्ञान के। इस सम्बन्ध में Bogardus ने लिखा है कि, "सामाजिक गतिविज्ञान प्रगति के नियमों पर विचार करती है।" दूसरे शब्दों में हम गतिविज्ञान को समाज के क्रमिक परिवर्तनों का विज्ञान कह सकते है जो एक निश्चित क्रम में घटित होता है।

इससे स्पष्ट होता है कि Comte सामाजिक परिवर्तन में आस्था रखता था। समाज के विभिन्न अंगों में एक क्रमिक परिवर्तन होता है जिसके परिणामस्वरूप मानव समाज एक निर्धारित क्रम के अनुसार प्रगति करता है।

Auguste Comte के समाजशास्त्र की निम्नलिखित विशेषताएँ है:-

1. मानव स्वभाव का अध्ययन → इसके अन्तर्गत मानव स्वभाव एवं उसकी प्रवृत्तियों का सूक्ष्मता पूर्वक अध्ययन किया जाता है।
2. अमूर्त विज्ञान → इसके अन्तर्गत अध्ययन का उद्देश्य तथ्यात्मक नहीं बल्कि सैद्धान्तिक होना चाहिए। समाजशास्त्र का सम्बन्ध नियमों से है न कि तथ्यों से। अतः समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है।
3. समन्वयात्मक विज्ञान → समाजशास्त्र विभिन्न विज्ञानों की रचनात्मक एकता की खोज करके तथा उन्हे समन्वित करके सभी विज्ञानों पर लागू होने वाली एकमात्र वैज्ञानिक व्यवस्था का निर्माण करता है।
4. पूर्वानुमान क्षमता → अन्य विज्ञानों की भाँति अन्य बातें समान रहने पर समाजशास्त्र की भविष्यवाणी भी सत्य सिद्ध होती है।
5. पुनर्निमाण का विज्ञान → कॉम्टे समाजशास्त्र को विज्ञान मानते है तथा सामाजिक पुनर्निमाण इसका एक अद्भुत अंग है। कॉम्टे का कहना है विज्ञान मानव के लिए है न कि मानव विज्ञान के लिए। उनके अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक संगठन व्यवस्था एवं प्रगति का विज्ञान है। कॉम्टे का कहना है कि अन्य विज्ञानों की भाँति समाजशास्त्र भी क्रमिक विकास करता हुआ आज इस स्थिति में पहुँचा है।

S.N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner